The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 8 | August 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

नशे की प्रवृत्ति का व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन

डॉ. शिप्रा गुप्ता, (रीडर), विभागाध्यक्ष, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

प्रिया शर्मा, (बी.एड., एम.एड. छात्रा), बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

***नशा** ,मानसिक स्वास्थ्य, नषे के आदि विद्यार्थी, नषीले पदार्थ*

ABSTRACT

शिक्षा मानव जीवन का आधार है। मानव का विकास और उन्नति **शिक्षा** पर ही निर्भर है। **शिक्षा** व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है और श्रृंगार भी करती है। जन्म के समय बालक पशुवत आचरण करता है। उस समय वह अपनी मूल प्रवृतियों से प्रेरित होकर कार्य करता है। **शिक्षा** उसकी इन प्रवृतियों का उचित मार्गदर्षन करके उसे परिपक्वता प्रदान करती है। उसके व्यवहार को उसके आचरण को क्रियाकलापों को उचित समाजोपयोगी बनाती है। अतः **शिक्षा** का स्वरूप इस प्रकार का होना चाहिये कि व्यक्ति अपने वातावरण में अपने आप को समायोजित कर सके। जो विद्यार्थी अपने वातावरण से सामंजस्य नहीं कर पाता उसके कुसमायोजन होने के आसार बढ जाते है। जिससे उनकी संगति गलत हो जाती है। फलस्वरूप वह अपने मार्ग से भटक कर बुरे राह पर चलने लगते है और कई कुसंगतियों के षिकार हो जाते है। उनमें से एक कुसंगति है– नषा। नषा एक ऐसी लत या बीमारी है जो हमारे समाज को हमारे देष को निगलती जा रहीं है।

प्रस्तावना :–

आज शहर और गांवो में पढ़ने लिखने की उम्र में विद्यार्थी नषे का आदि बनता जा रहा है। इस बुराई के कुछ हद तक जिम्मेदार हम लोग भी है। हम इतना व्यस्त हो गये है कि हमे फुर्सत हीं नहीं है कि हम अपने बालक व आस पास के बच्चों पर ध्यान दे। बच्चों की मांगो को पूरा करना हीं अपनी जिम्मेदारी समझ बैठे है।

आज विद्यार्थियों में नषे की प्रवृति खतरनाक ढंग से बढ रहीं है। आज वह आकर्षण, फैषन, दिखावे के लिए इस दल–दल में घिरता चला जा रहा है। आज विभिन्न रूपों में नषे की प्रवृति में लिप्त किषोर नषे को प्राप्त करने के लिए किसी भी हद तक पहुँचते है। इससे सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं के साथ साथ चोरी, छेडछाड, अपराध व्याभिचार की समस्याएँ सामने आती है। किषोरों में शराब, गुटका, पान–मसाला, ध्रुमपान अनेक नषे सम्बन्धी पदार्थों की लत बढने लगी है।

देष के विद्यार्थी देष का भविष्य होते है। विद्यार्थी ही देष का नाम रोषन करते है परन्तु आज आधुनिक परिवेष की चकाचौंध में विद्यार्थी पीढ़ी में नषे की आदत बढ़ती जा रहीं है। नषे की आदत अब बडे शहरों में ही नहीं बल्कि छोटे शहरों और कस्बों तक भी बढ़ती जा रहीं है।

विष्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत की लगभग 30 प्रतिषत आबादी नियमित रूप से शराब का सेवन करती है। जिसमें से 88 प्रतिषत जनसंख्या 16 से 18 वर्ष की आयु के नषे के सेवन कर रहीं है। भारत सरकार द्वारा सर्वे के अनुसार 7.13 करोड भारतीय नषे के सेवन कर रहे है।

हम देखते है कि नषा ऐसी लत है कि जो व्यक्ति को अपने जाल में जकड कर उसका अस्तित्व समाप्त कर रही है। एक सर्वे के अनुसार स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय ने 2014 में 15 से 19 वर्ष आयु समुह के लडको पर एक सर्वेक्षण किया जिसमें यह चौकाने वाले तथ्य सामने आए कि 28.06 प्रतिषत लडके तम्बाकू और 15 प्रतिषत अल्कोहल सेवन से आसक्त है। इसी आयु समूह की लडकियों को भी अध्ययन में शामिल किया गया था जिसमें यह पता लगा है कि 8.5 प्रतिषत लड़कियाँ तम्बाकू और 7 प्रतिषत अल्कोहल के सेवन की आदि है।

एम्स द्वारा की गई शोध से पता लगा है कि 29 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने साथियों के दबाव (पीयर प्रेषर) से नषा लेना शुरू किया जबकि 19 प्रतिषत ने जिज्ञासा। आजमाईष के लिए ऐसा करना शुरू किया। जिन्होंने अपने आप को ऊंचा दिखाने के लिए नषा करना चाहा ऐसे लोग 16 प्रतिषत है जबकि 9 प्रतिषत ने रोजमर्रा के तनाव व परेषानियों का सामना करने के लिए अग्रसर किया। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड के अनुसार नषे की लत के कारण वर्ष 2001 में 10 हजार से अधिक लोगों ने अपने जीवन की लीला समाप्त कर ली है। इस मामले में सबसे ऊपर महाराष्ट्र तथा मध्यप्रदेष कर्नाटक इन तीनों राज्यों में सबसे अधिक वृद्धि देखी गई।

मार्च 2024 राजस्थान राज्य के बाडमेर जिले में नषे की तस्करी सम्बन्धी मामला सामने आया जिसमें 9 लोगों को गिरफ्तार किया यह सभी 23 साल से कम उम्र के युवा व किषोर विद्यार्थी थे। अनके अपराधों से लिप्त व इन पर केस तथा इनके पास अवैध हथियार (पिस्टल) पाये गये। हम देखते है कि नषे के कारण व्यक्ति शारीरिक रूप से तो कमजोर होता ही है साथ ही मानसिक रूप से भी कमजोर होता है। उनके सोचने समझने की क्षमता नष्ट हो जाती है। साथ ही वह तनाव दबाव गलत संगति शोक आदि के कारण नषे की ओर अग्रसर होता जाता है।

अध्ययन का औचित्य :–

नषा एक ऐसी लत है जो व्यक्ति को शारीरिक ही नहीं मानसिक व आर्थिक रूप से भी नुकसान पहुंचाती है। यह आदत छात्र–छात्राओं के सोचने समझने की शक्ति को खत्म कर देती है। विद्यार्थी अपना आत्मविष्वास खो देता है।

यह लत उसे भावनात्मक रूप से इतना कमजोर कर देती है कि उसके आगे बढ़ने की चाहत खत्म कर देती है। वह अंधकार में खोने लगता है उसे अनेक मानसिक बिमारियां जकड लेती है। तनाव, आत्मविष्वास की कमी, व्यवहार में परिवर्तन, घबराहट, आदि अनेक मानसिक बिमारियाँ जकड लेती है कहा जाता है कि विद्यार्थी देष का नाम रोषन करते है उसे प्रगति की ओर अग्रसर करते है।

परन्तु आज आधुनिक परिवेष की चकाचौंध में विद्यार्थी पीढ़ी में नषे की आदत बढ़ती जा रहीं है। नषे की आदत अब बडे शहरों में नहीं बल्कि छोटे शहरों और कस्बों तक भी बढ़ती जा रहीं है। जयपुर राजस्थान शहर की राजधानी है जो हर क्षेत्र में उन्नति कर रहा है। किन्तु नषे की समस्या से यह शहर भी अछूता नहीं रहा है। आज विद्यार्थी चकाचौंध फैषन के नाम पर नषे की ओर अग्रसर हो रहे है।

आज विद्यार्थी तनाव, सहपाठी दबाव, समाज में अपने आप को दिखाने के लिए बहुत से खतरे मोल लेते है। जिससे उनमें तनाव, चिडचिडापन कुसमायोजन जैसे सामाजिक अस्वस्थता के लक्षण दिखते है और धीरे धीरे वह अपराध की ओर अग्रसर हो जाते है। अतः उनके मानसिक स्वास्थ्य में क्या नषा भी करना एक कारण हो सकता है। जो उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डाल रहा हो। इसलिए हमने इस विषय का चयन किया है।

सम्बन्धित साहित्य :–

- **डॉ, सुप्रीत और डॉ. पूनम चालिया (2013)** : इन्होंने किषोरावस्था के छात्रों का नषे की लत से ग्रतिस होने के कारणों का अध्ययन किया। उद्देष्य छात्रों में नषे की प्रवृति के कारणों का जानना। नषा खरीदने के लिए सम्बन्धित आय स्त्रोत का अध्ययन करना। निष्कर्ष छात्र नषा अपने मित्रों के साथ के लिए करते है। परिवार में नषे की प्रवृति के कारण नषा करते पाया गया है।
- **डॉ. रजना जैन (2018)** :– इन्होंने नषा करने वाले तथा नषा न करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन। उद्देष्य नषा करने वाले तथा न करने वाले विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले किषोरों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना। निष्कर्ष नषा करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि नषा न करने वाले विद्यार्थीयों से कम है। कहा जा सकता है कि नषा नहीं करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अधिक होती है।
- **राजीव शर्मा, आईपीएस (2019)** : बच्चों में मादक पदार्थो के सेवन के लत पड़ने सम्बन्धी अध्ययन। उद्देष्य बच्चों में नषे की लत सम्बन्धी समस्या का अध्ययन करना। निष्कर्ष युवा वर्ग से अधिक बालकों में मादक पदार्थों का सेवन करना अधिक पाया गया है।

- **भीमसिंह खेतान (2020)** : विद्यार्थियों में नषे की प्रवृति के सन्दर्भ में शारीरिक मानसिक व असुरक्षा की भावना का विष्लेषणात्मक अध्ययन। उद्देष्य नषे के आदि व विमुक्त विद्यार्थियो में असुरक्षपा की भावना का अध्ययन करना। नषे के आदि व विमुक्त विद्यार्थियों के मानसिक व शारीरिक गतिविधियों का अध्ययन करना। निष्कर्ष नषे के आदि विद्यार्थियों में अपराधिक प्रवृति पायी गयी। नषे के आदि विद्यार्थियों के मानसिक व शारीरिक स्वासथ्य में कम पाया गयी।
- **सोनिया शर्मा (2019)** : किषोरों में बढ़ता मद्यपान तथा मादक पदार्थों का सेवन एक चिन्ताजनक विषय। उद्देष्य किषोरों में नषे की लत के कारणों को जानना। नेषे के कारण होने वाली अपराधिक प्रवृति को जानना। निष्कर्ष अधिकांष किषोर नषे के कारण आपराधिक प्रवृति की ओर अग्रसर हो रहे है। नषे के प्रति लोगों का जागरूक ना होना पाया गया।

साहित्य विवेचना :–

प्रस्तुत शोध में नशे की प्रवृत्ति का व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना है। इससे सम्बन्धित अध्ययन निम्न है **डॉ, सुप्रीत और डॉ. पूनम चालिया (2013),डॉ. रजना जैन (2018),राजीव शर्मा, आईपीएस (2019),भीमसिंह खेतान (2020),सोनिया शर्मा (2019)** अतः उपरोक्त शोध अध्ययनों में नषे की प्रवृति एवं व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य हेतु अनेक अध्ययन हुए है। परन्तु नशे की प्रवृत्ति का व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन के प्रति सन्तोषजनक परिणाम उपलब्ध नहीं है इसलिए नशे की प्रवृत्ति का व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन नामक शीर्षक रूप में समस्या का चयन किया गया है।

समस्या कथन :–

नशे की प्रवृत्ति का व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन

शोध के उद्देष्य : –

नषे के वातावरणीय कारकों का व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

न्यादर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान राज्य के जयपुर शहर के नषा मुक्ति केन्द्र से नषे से पीडित 50 व्यक्तियों का चयन किया गया।

शोध उपकरण :–

प्रस्तुत शोध कार्य में नषे से पीडित व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों के कारणों का अध्ययन करने के लिए उनके पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यक्तिगत पर साक्षात्कार प्रष्नावली निर्मित की गई तथा मानसिक स्वास्थ्य मापनी के लिए प्रमोद गुप्ता की प्रमाणिकृत मापनी का प्रयोग किया गया।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध कार्य में व्यक्तिगत अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया जिसमें जयपुर शहर के 3 नषा मुक्ति केन्द्रों से 50 व्यक्तियों का चयन किया गया।

सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतिषत विधि का प्रयोग किया गया।

उद्देष्य :– नषे के वातावरणीय कारकों का व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

पारिवारिक	आर्थिक	सामाजिक	व्यक्तिगत
64.09%	67.50%	72.72%	73.59%

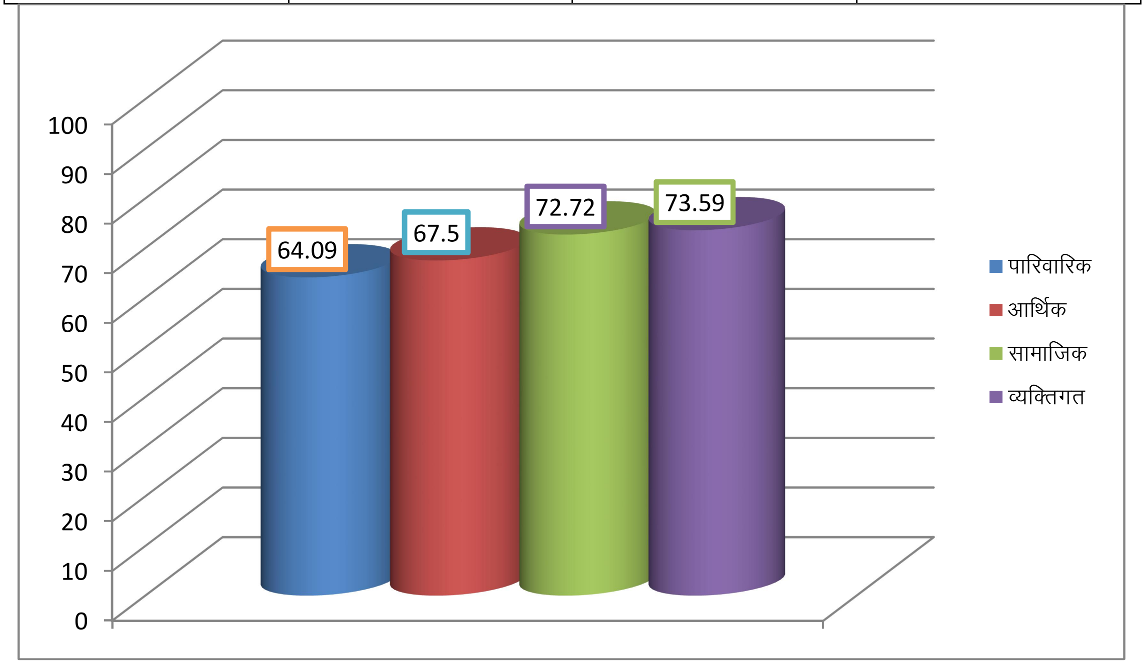

परिणाम :–

शोधकर्त्री द्वारा निर्धारित उद्देष्य नषे के व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। इस उद्देष्य की प्राप्ति हेतु राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के नषा मुक्ति केन्द्रों के पीडित व्यक्तियों पर अध्ययन किया गया। उनकी मानसिक स्वास्थ्य का पता करने के लिए पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, व्यक्तिगत कारणों का अध्ययन किया जिसमें पाया कि वह शौक, तनाव, चिंता, दबाव, अकेलापन, आर्थिक स्थिति अच्छी ना होना व गलत संगति के कारण नषे की ओर अग्रसर हुये है। हम देखते है कि आज नषे की रोकथाम के लिए सरकार द्वारा नये कानून व योजनाएँ बनायी गयी है। इन सभी को कठोरता से अपनाना होगा व सजा तथा जुर्माना आदि के प्रावधान में बदलाव करने चाहिए। साथ ही परिवार समाज इनको भी नषे से पीडित व्यक्ति को समझाना व रोकना तथा नषे से छुटकारा पाने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

निष्कर्ष –

अतः कहा जा सकता है कि नषे में पीडित व्यक्ति शारीरिक के साथ साथ मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव पड़ रहा है। अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि उसके पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, व्यक्तिगत कारणों का उसके नषे की ओर अग्रसर होने का मुख्य कारण है।

परिवार द्वारा अकेलापन, साथ ना देना, असमझना समाज द्वारा सामंजस्य ना बैठना, आर्थिक स्थिति खराब व तनाव, चिंता दबाव आदि के कारण वह नषे की ओर अग्रसर हो रहे है। इसका कारण परिवार, समाज, द्वारा उसका साथ देना व उसको समझना आदि का प्रावधान कठोरता से पारित करना तथा गलत चल चित्रों के प्रदषर्न की रोकथाम करना तथा नषे से पीडित व्यक्ति की गलत संगति को मिटाना (परिवर्तित) करना।

उसे नषे से हो रहे दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना तथा सरकार परिवार समाज को भी नषे से सम्बन्धी दुष्परिणामों के प्रति जागरूका होना आवष्यक है। आज नषे के कारण व्यक्ति को अनेक मानसिक व शारीरिक बिमारियों ने जकड रखा है। इससे छुटकारा पाने के लिए अनेक जागरूक कार्यक्रम नुक्कड नाटक, फिल्मों व नषे की तस्करी सम्बन्धी रोकथाम करनी चाहिए।

परिवार में माता–पिता व भाई बहन द्वारा नषे से पीडित व्यक्ति को समय ना देना व परिवार के व्यक्ति द्वारा नषा करना भी व्यक्ति को नषे की ओर अग्रसर कर रहा है जिस कारण परिवार को समझना होगा तथा उसे नषे की लत से छुटकारा पाने के लिए उसकी मदद करनी चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- सिंह, एम. एन. (1999); ‘‘ड्रग्स तथा आधुनिक समाज‘‘, विवेक प्रकाशन दिल्ली पृष्ठ संख्या–20
- फुकन, आर.एस. (2013) : ड्रग की समस्या पंजाब और दिल्ली में सरकार का सर्वेक्षण (https://www.Mapsfindia.com)
- यूथ इन इंडिया वे रिपोर्ट ीजजचेरूध्ध्तजपबंसेपदकपेंवपिदकपंण्पदकपंणपितमदेमउध्2011.02ण
- आहूज, राम, ‘‘भारत के सामाजिक समस्याएँ‘‘, जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स, 2000.
- Becker, Howard "becoming a Marijura", New York, John Willey & Songs inc, 1953.
- Clinbell Howard "Understanging and counseling the alcoholic." New York, Abigdon, Press, 1956.
- Herry Gold and scarpiti freak (ed). "Combating social problems", New York, Helt, Reinbact and Winston, 1967.

- https://pib.gir.in/press.relesepage.aspx.prid-1575882
- https://hiwikipedia.org/wiki/u’khyh nok dk lsou